इकाई 6

उद्यमशीलता संबंधी गतिविधियाँ: महिलाओं के लिए अवरोधों को दूर कर पाना

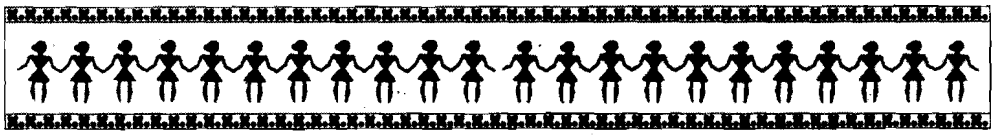

सामान्य उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप अपने प्रशिक्षण सत्र के सहभागियों को उद्यमशीलता क्या है और उद्यम को विकसित करने में महिलाओं को जिन अवरोधों का सामना करना पड़ता है, इसकी संक्षिप्त जानकारी प्रदान करने में उनकी सहायता करने के योग्य बन सकेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य

इस प्रशिक्षण इकाई के माध्यम से, आप:

- प्रशिक्षणार्थियों को उद्यमशीलता का वर्णन करने के योग्य बनाने में उनकी सहायता कर सकेंगे;
- प्रशिक्षणार्थियों को उनके अवरोधों की पहचान करने और उन्हें दूर करने के योग्य बनाने में उनकी सहायता कर सकेंगे; और
- प्रशिक्षणार्थियों को उद्यमी बनने के फायदों को सूचीबद्ध करने के योग्य बनाने में उनकी सहायता कर सकेंगे; और
- उद्यम के निर्माण और इसके प्रबंधन में महिलाओं के सम्मुख आने वाली समस्याओं की पहचान करने के योग्य बनाने में प्रशिक्षणार्थियों की सहायता कर सकेंगे।

योजना बनाना

समय	:	तीन घंटे
प्रशिक्षण कार्यप्रणाली	:	समूह चर्चा, अनुकरण (Simulation) अभ्यास और समूह कार्य
प्रशिक्षण सामग्री	:	टूटी हुई चौकोर (Square game) के भाग, चार्ट और मार्कर (पेन)
प्रशिक्षक की तैयारी	:	महिला संबंधी उद्यमों में शामिल सामाजिक लिंग-मुद्दों, ऐसे उद्यमों की विशेषताएँ, इनके फायदे और इनके कार्यों पर आधारित चार्ट और पोस्टर तैयार करना। खेलों के संचालन के लिए अपेक्षित प्रबंधन-व्यवस्था को समझना। उद्यम शुरू करने में, इसके प्रबंधन में और इसे लंबे समय तक कायम रखने में महिलाओं के सम्मुख आने वाली कठिनाइयों पर लघु व्याख्यान देने की योजना तैयार करना।

पृष्ठभूमि विवरण

उद्यमशीलता क्या है?

उद्यमशीलता और उद्यमी की परिभाषा विविध स्थितियों पर आधारित है। प्रत्येक स्थिति को ध्यान में रखकर इसे और अधिक लचीला बनाया जा सकता है और स्थिति के आधार पर ही इसे विस्तृत ढंग से प्रयोग में भी लाया जा सकता है। छोटे समुदायों, संगठनों, समूहों या राष्ट्रों में उद्यमशीलता संबंधी व्यवहार को दिए जाने वाले मूल्य पर यह एक प्रतिक्रिया है। उद्यमी की सर्वाधिक सरल और सार्थक परिभाषा शायद इस प्रकार है:

'उद्यमी वह व्यक्ति है जो अवसर की तलाश करता है और इस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए संगठन का निर्माण करता है।' इस तरह का व्यवहार बहुत-सी स्थितियों में देखा जा सकता है और जितना किसी नये व्यवसाय का शुरू करने वाले जाने-माने प्रारंभिक व्यक्ति से इसका तात्पर्य है उतना ही यह व्यवहार समान रूप से किसी किसान, बड़े उद्योग के विपणन प्रबंधक पर भी लागू हो सकता है। बहुत से संगठन अपने स्टॉफ में उद्यमशीलता संबंधी व्यवहारों को अधिकाधिक अपनाने का प्रयास करते हैं और जिसके फलस्वरूप उद्यमशीलता की माँग उद्यम वृद्धि के विस्तार से ज्यादा व्यापक है। उस गूढ़ विशेषता के बारे में बहुत से विचारकों ने अपनी राय दी है जो कि उद्यमी में होती है और जिसकी वजह से दूसरों की तुलना में इनकी छवि अलग नजर आती है। ऐसी राय में सर्वाधिक सार्थक राय जैफरी टिम्मान की है, जिनका मानना है:

'अनुभवी उद्यमी की यह विशेषता होती है कि वह अवसर को प्रकट होने से पहले ही भाँप लेता है। बहुत से विचारों में से सही विचार छाँटने की प्रक्रिया और ऐसे विचार को मान्यता देना अर्थात् ऐसी बात की तुलना प्रहेलिका (Jigsaw puzzle) में सही टुकड़ों को फिट करने से भी की जा सकती है। ऐसी प्रहेलिका को सिर्फ एक इकाई समझ कर टुकड़ों को सही जगह पर फिट करना असंभव है। बजाय इसके, ऐसे टुकड़ों या धारणाओं को जोड़ना है जिनके बीच अंत: संबंध स्पष्ट नहीं दिखता और उनके संबंध को पहचानकर उन्हें जोड़ना एक अनुभवी उद्यमी के लिए आम बात है। ऐसे विचारों की पहचान करने की योग्यता जो आगे चलकर उद्यमशीलता संबंधी अवसर बन सकते हैं, यह ऐसे सामर्थ्य की देन है जिसे अन्य लोग नकार देते हैं या अनदेखा कर देते हैं और वह क्षमता जिससे पता चलता है कि एक और एक तीन या अधिक बन सकते हैं। जबकि अन्य लोग इस पहेली को नहीं बूझ सकते।

सुप्रसिद्ध अमेरिकी उपन्यासकार मार्क टवेन के इस वक्तव्य से पता चलता है कि उन्हें सदैव स्वयं में उद्यमी बनने के गुण न होने का अफसोस रहता था क्योंकि 'उनका मानना था कि जब अवसर लगभग उनके हाथ से जाने वाला होता था तभी उन्हें इसकी पहचान होती थी।' हालांकि, डेविड मैकलेलैंड का नाम ऐसे लोगों में अग्रणी है जिन्होंने उद्यमशीलता की समझ और इसके अनुप्रयोगों को जोड़ा। उन्होंने यह प्रस्तावित किया कि उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए अलग-अलग स्थितियों में लागू या वैध समझी जाने वाली कार्यप्रणालियों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। उनके द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरण प्रशिक्षण उद्यमशीलता के विकास में पिछले चालीस वर्षों से एक आधार के रूप में विकसित हुआ है। इनमें से अधिकांश लेखकों ने मुख्यतया व्यक्ति-विशेष के निजी सामर्थ्य पर ध्यान केंद्रित किया है और कुछ दृष्टिकोणों से नवनिर्मित समाज और नवीन कार्यों और प्रगति के प्रवर्तक के लिए धनुर्धारी के रूप में उद्यमी की भूमिका का गुणगान किया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस सिक्के का एक अन्य पहलू भी है और वह है – आत्मसंतोष और अपने अधिकाधिक निजी स्वार्थों के लिए उद्यमी का अपना व्यक्ति-सापेक्ष नज़रिया। समाज की आकांक्षाओं के संदर्भ में उद्यमशीलता को समझना बेहद महत्वपूर्ण है। विकासशील देशों में जो प्रारूप

ज्यादातर देखा जाता है, वह है जहाँ उद्यमी और समाज के बीच की अंत: क्रिया को अधिक महत्व दिया जाता है। विकासशील देशों में यह निम्न आय समूहों के पक्ष में धन के वितरण में फेरबदल करने पर लक्षित है। इससे ऐसे कार्यों में नवीनता को उत्प्रेरित करके आशा की जाती है कि इससे ऐसे कार्यों में निवेश भी होगा और जिसके परिणामस्वरूप लम्बे समय तक फायदा बना रहता है। कई बार उद्यमशीलता संबंधी कार्यक्रमों को 'क्विक फिक्स' (Quick fix) के रूप में देखा जाता है जो कि ऐसा कुछ है जिसे सस्ती कीमत पर पूरा किया जा सकता है।

पिछले दस वर्षों से समाज में उद्यमियों और उनकी भूमिकाओं पर काफी शोध किया गया है। इसके अलावा अधिक सफल बनने के प्रशिक्षण संबंधी अंत:क्षेपों के लिए कौन-सी स्थितियाँ आवश्यक हैं, इस पर भी काफी शोध किया गया है। कुछ अवरोध ऐसे हैं, जो निजी और सामाजिक अवरोध कहलाते हैं और उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सफल दरों के लिए जिनकी ओर ध्यान देना जरूरी है।

व्यक्तिगत अवरोध

बहुत से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य आवश्यक कौशलों को इस परिणाम की ओर मोड़ना है कि समझबूझ तो हासिल कर ली जाती है लेकिन इसका प्रयोग बहुत कम होता है। ऐसा विशेष रूप से महिलाओं के निम्न आय समूहों में देखा जाता है जहाँ व्यावसायिक स्थितियों की औपचारिकता को सामने देखकर वे घबरा जाती है जैसा कि ऋण प्राप्त करने के मामले में।

- पहला चरण है जागरूकता जिसमें सहभागियों को यह जाँच करने के लिए प्रेरित किया जाता है कि वे कौन हैं और वे अपने निजी व्यक्तित्व, मनोबल, क्षमताओं और संसाधनों का मूल्यांकन किस प्रकार करते हैं।
- दूसरा चरण है, व्यक्ति का अपने निजी सामर्थ्य और दोषों को स्वीकार करना या उनकी पहचान करना।
- तीसरा चरण है, लक्ष्य का निर्धारण करना।
- चौथे चरण में सहभागियों के मनोबल, सामर्थ्य के आधार पर सूत्रबद्ध कार्यनीतियों या कार्य योजनाओं को विकसित करना शामिल है।
- पाँचवें चरण में ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव शामिल है, जहाँ सैद्धांतिक पक्ष को व्यावहारिक पक्ष में बदलने पर जोर दिया जाता है।
- अंतिम चरण सशक्तिकरण से संबंधित है जहाँ निर्मित कार्य योजनाओं और अर्जित कौशलों/सामर्थ्य को वैयक्तिक सामर्थ्य और लक्ष्यों से मिलाया जाता है।

समाज में मौजूद अवरोध

बहुत से छोटे और लघु उद्यम संबंधी कार्यक्रम लघु उद्यमियों, विशेष रूप से विशिष्ट कार्यक्रमों से संबंधित महिलाओं के पक्ष में होते हैं और जो कच्चे माल की आपूर्ति के लिए महिलाओं को पहुँच स्थापित करने में विशेष प्राथमिकता प्रदान करते हैं, उन्हें ब्याज की कम दरों पर उधार माल प्राप्त करने में सहायता करते हैं और महिलाओं द्वारा प्राप्त औद्योगिक जगह का कम किराया वसूल करते हैं और उन्हें विस्तार संबंधी सेवाएँ नि:शुल्क प्रदान करते हैं। यहाँ लघु उद्यमी/उद्यम के मूल्य की पहचान की गई लेकिन मौजूदा शोषण के परिणामों के बारे में डर अभी भी मौजूद है।

उद्यमशीलता के उद्‌भव के लिए कुछ संस्कृतियाँ अधिक सहायक हैं लेकिन इन सभी संस्कृतियों का अपना ही अंदाज नजर आता है। सामूहिक संस्कृतियों में उद्यम शुरू करने के लिए अभिप्रेरण, व्यक्ति-विशेष आत्मसिद्धि की बजाय परिवार और समुदाय की आवश्यकताओं से ज़्यादा गहराई से जुड़ा हुआ है।

सशक्तिकरण की प्रक्रिया का उद्भव मनोबल के मूल तत्वों (प्रेरणा) में निहित है जो उसे कुछ कार्य (गतिविधि) करने की राह दिखाते हैं। इस क्रिया या गतिविधि का सकारात्मक उद्देश्य 'सशक्तिकरण' कहलाता है। आमतौर पर हम यह मान कर चलते हैं कि सशक्त होकर महिला न केवल अपने उद्यम को भलीभांति और सफलतापूर्वक चला पाती है बल्कि इससे अपने जीवन की सभी क्रियाओं को खुद करने का हौसला भी उसे मिलता है। इस तरह सशक्तिकरण से उद्यमशीलता उत्पन्न होती है। इस प्रक्रिया की प्रस्तुति इस तरह भी की जा सकती है:

मैं करना चाहती हूँ + मैं कर सकती हूँ = मैं करूँगी।
(अभिप्रेरण) (क्रिया) (सशक्तिकरण)

जेंडर (सामाजिक लिंग) आधारित उद्यमशीलता संबंधी कार्यक्रम में उपर्युक्त का समावेश आवश्यक है।

महिलाओं के रास्ते की बाधाएं

बहुत से गरीब परिवारों में परिवार की रोजी-रोटी चलाने का जिम्मा ऐसे परिवारों की गरीब महिलाओं पर ही है। यदि रोजगार प्राप्त करने में वे असमर्थ हैं तो उनके लिए दूसरा विकल्प कौन-सा है? शायद स्व-रोजगार ही एकमात्र विकल्प है। इसके कारण हो सकते हैं:

- घर बैठे ही लघु उद्यमों को चलाया जा सकता है।
- लघु उद्यमों को मौसमी आधार पर या अंशकालिक रूप से भी चलाया जा सकता है।
- रोजगार प्राप्त करने के लिए महिलाओं के पास अनिवार्य शिक्षा नहीं होती।

आपके प्रशिक्षण सत्र की कार्य योजना

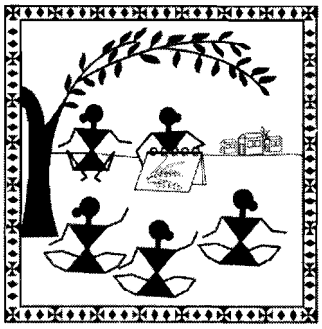

समूह गतिविधि-1

आप किसी उद्यम के प्रबंधक हैं और आपको तय करना है कि दो संभावित लघु उद्यम सहायता परियोजनाओं में से कौन-सी शुरू की जाए?

- परियोजना क: इससे 1000 पुरुष हर हफ्ते अपनी आमदनी में 100 रु. और अधिक जोड़ सकेंगे।
- परियोजना ख: इससे 1000 महिलाएँ उपर्युक्त आमदनी को समान रूप से हासिल कर सकेंगी।

दोनों परियोजनाओं की लागत लगभग एक जैसी है और आप किसी एक का चयन कर सकते हैं। क और ख के पक्ष में यथासंभव कारणों की पहचान कीजिए और तय कीजिए कि आप किसका चयन करेंगी और क्यों?

दोनों परियोजनाओं के पक्ष में उभरने वाले वाद-विवादों को सूचीबद्ध कीजिए और स्पष्ट कीजिए कि सहभागी दोनों नजरियों को समझने के योग्य अवश्य ही होंगे।

परियोजना क: 1000 पुरुष (महिलाओं के लिए बाधाएं)

पुरुष:

- इन्हें महिलाओं की तुलना में ऋण आसानी से मिल जाता है;
- सामग्री और बाजार तक इनकी पहुँच होती है;
- महिलाओं की तुलना में पुरुष अपेक्षाकृत अधिक शिक्षित होते हैं;
- ये अपेक्षाकृत अधिक कुशल होते हैं;

- शारीरिक रूप से अधिक मजबूत होते हैं;
- अपनी व्यावसायिक जरूरतों के मुताबिक ये हर तरह का सफर आसानी से तय कर लेते हैं;
- इनका व्यावसायिक अनुभव अपेक्षाकृत अधिक होता है;
- समाज पर इनका अधिक प्रभाव है: इस नजरिए को बदलना बेहद कठिन है;
- इनके द्वारा चालित उद्यमों की भविष्य में विकसित होने की अधिक संभावना बनी रहती है; और
- शिशु जन्म और पारिवारिक देखभाल से इनके कामकाजों पर कोई असर नहीं पड़ता।

परियोजना ख: 1000 महिलाएँ

महिलाएँ:

- पुरुषों की तुलना में महिलाओं को स्व-रोज़गार की जरूरत अधिक है;
- नियमित रूप से बचत करती हैं;
- ऋण की अदायगी अधिक विश्वसनीयता से करती हैं;
- अधिक मेहनतकश और अपने लक्ष्य के प्रति अधिक वचनबद्ध होती हैं;
- अपनी आय का अधिकांश भाग अपने परिवार पर खर्च करती हैं;
- इन्हें सशक्त करने की ज़रूरत हैं;
- दूसरे लोगों से इनका तालमेल बेहतर ढंग से होता है; और
- महिलाओं की तुलना में पुरुषों को नौकरी मिलने की संभावना भी अधिक होती है।

समूह गतिविधि-2

प्रशिक्षक के रूप में आप दीवार पर पिन की सहायता से दो चार्ट लगाएँ और इन दोनों चार्टों में महिला की छवि को प्रस्तुत करें।

सहभागी पहले चार्ट में महिला की आकृति के विविध भागों को तीर के निशान से दर्शाएँगे जो कि असल में महिलाओं के सम्मुख आने वाले अवरोध हैं। इसी तरह सहभागी दूसरे चार्ट पर महिला के निजी सामर्थ्य को भी दर्शाएँगे।

प्रशिक्षक उपर्युक्त गतिविधि पर आधारित चर्चा को आसान बनाता है और महिलाओं में उद्यमशीलता से संबंधित मुद्दे को उजागर करता है।

समूह गतिविधि-3

टूटे हुए चौकोर

समूह को हिदायतें:

पाँच लिफाफों का एक सेट जिसमें विविध किस्मों और आकार में कटे हुए कार्ड बोर्ड के टुकड़े हैं और जिन्हें जब सही तरीके से व्यवस्थित किया जाएगा तो इससे समान आकार के पाँच चौकोर बनेंगे। ऐसा एक सेट पाँच व्यक्तियों के प्रत्येक समूह को दिया जाता है। जब सहायताकर्ता शुरू करने का संकेत देता है तो समूह का कार्य समान आकार के पाँच चौकोरों को बनाना है। जब तक सहायताकर्ता के समक्ष प्रत्येक व्यक्ति दूसरों द्वारा समान आकार के निर्मित सही चौकोर के टुकड़ों को प्रस्तुत नहीं कर देता तब तक इस कार्य को पूरा नहीं समझा जाएगा। अपना कार्य करते समय समूह को खेल के निम्नलिखित नियमों का पालन अवश्य करना होगा:

1. कोई भी सदस्य एक-दूसरे से बातचीत नहीं करेगा।

2. किसी भी सदस्य को संकेतों से या अपने हाव-भाव से अन्य सदस्यों से कार्ड के टुकड़ों की माँग करना या इसके बारे में पूछताछ करने की अनुमति नहीं है।
3. सदस्य, समूह के अन्य सदस्यों को हालांकि टुकड़े दे सकते हैं। किसी भी सदस्य को टुकड़े सौंपे जा सकते हैं लेकिन टुकड़ों को एक-दूसरे की तरफ फेंकने या बीच में छोड़ने की अनुमति नहीं है। यदि टुकड़ों को बीच में छोड़ दिया जाता है तो प्रेक्षक या निर्णायक द्वारा इन टुकड़ों को जब्त किया जा सकता है।

प्रेक्षक के लिए हिदायतें

आप ऐसे समूह पर गौर करने जा रहे हैं जिसमें पाँच खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। प्रत्येक खिलाड़ी के पास कार्ड बोर्ड के टुकड़ों वाला पैकेट है। समूह का कार्य इन कार्ड बोर्ड के टुकड़ों का प्रयोग करते हुए समान आकार के पाँच चौकोर बनाना है। उन्हें हिदायत दी जाती है कि वे अपना कार्य जल्द से जल्द पूरा करें। उनका कार्य तभी पूरा माना जाएगा, जब समूह सदस्यों के समक्ष समान आकार के चौकोर तैयार मिलते हैं। इसके अलावा प्रेक्षक को उपर्युक्त तीन नियमों को ध्यान में रखना भी आवश्यक है।

प्रेक्षक के रूप में आपको सुनिश्चित करना है कि समूह के खिलाड़ी इन मानदंडों का अनुसरण कर रहे हैं या नहीं। चूक (default) करने की स्थिति में निर्णायक की तरह पेश आएँ और नियमों का उल्लंघन न करने की चेतावनी खिलाड़ियों को दें। यदि सहभागी कार्ड बोर्ड के टुकड़ों को बीच में छोड़ देते हैं तो उन्हें इनकी जब्ती हो जाने के प्रति सचेत करें। निम्नलिखित बातों को विशेष रूप से ध्यान में रखकर विविध सहभागियों के व्यवहार पर भी गौर करें:

- कौन टुकड़े देने का इच्छुक था?
- चौकोर सर्वप्रथम किसने बनाया?
- दूसरों को टुकड़े देने के लिए किसने अपना चौकोर पहले तोड़ा?
- एक बार चौकोर बनाने के बाद कौन इसे तोड़ने के प्रति अनिच्छुक थी?
- कौन और किन परिणामों के साथ टुकड़ों को अपने हाथों में ही पकड़े रही?
- कौन दूसरे सहभागियों की आवश्यकताओं का पता लगाने के लिए अपनी निगाह इधर-उधर दौड़ा रही थी? और संसाधन के रूप में अपने टुकड़े दूसरों को देने का प्रयास कर रही थी?

प्रेक्षक के रूप में आप सहभागियों के ऐसे हर तरह के व्यवहार पर भी गौर करेंगे जिससे समूह अपना कार्य आसानी से कर सका या नहीं कर सकता और जिससे कार्य समय से पहले समाप्त हो गया।

चौकोरों का सेट बनाना

सेट बनाने के लिए पाँच कार्ड बोर्ड के चौकोर लें जिनमें से प्रत्येक 6 x 6 वर्ग इंच के आकार का हो। इन पाँचों चौकोरों में से प्रत्येक पर निम्नलिखित की भांति निशान लगाएँ। पेंसिल से हल्के से अक्षरों को लिखें ताकि बाद में इन्हें मिटाया भी जा सके। अब लाइनों के साथ-साथ टुकड़ों को काटें। निम्नलिखित कम्बीनेशन में इन टुकड़ों को पाँच अलग-अलग लिफाफों में रखा जाता है।

लिफाफा 1 (I, h और e)

लिफाफा 2 (a, a a और c)

लिफाफा 3 (a और j)

लिफाफा 4 (d और f)

लिफाफा 5 (g, b, f और c)

प्रक्रिया

इस खेल में समूह गतिशीलता पर जोर दिया जाता है जिसका परिणाम उद्यमशीलता है और संसाधनों को सार्थक आकार और परिणाम का रूप देने का अनुभव प्राप्त करना है, उद्यम के संदर्भ में इसका संबंध इस तथ्य से है कि प्रत्येक व्यक्ति के अपने कुछ वित्तीय संसाधन होते हैं लेकिन उद्यम को शुरू करने और चलाने में शायद ये प्राप्त न हों। हालांकि समूह के सभी सदस्यों के अपने थोड़े निजी संसाधनों को एक साथ जोड़कर इन संसाधनों को परिचालन स्तर तक उठाया जा सकता है। इसी तरह हर सदस्य में अपने निजी सामर्थ्य के आधार पर कुछ कौशल होते हैं लेकिन उसमें ऐसे कुछ अन्य कौशलों का अभाव होता है जो किसी अन्य सदस्य में मौजूद होते हैं। लाभकर रवैया, दूसरों के लिए सोचना, दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील रहना और प्रभावी संप्रेक्षण कुछ ऐसी क्षमताएँ और कौशल हैं जो उद्यमशीलता के विकास के लिए अनिवार्य हैं। ऐसे ध्यान में रखने योग्य तीन प्रमुख चरणों में शामिल हैं:

चरण-1

1. उद्देश्य की प्रस्तुति और सहभागियों से इसकी चर्चा।
2. महिला सहभागियों को व्यवसायी के कार्यों का वर्णन करने के लिए कहें। व्यवसाय को सफलतापूर्वक चलाने के लिए व्यावसायिक व्यक्ति क्या करता है?

   अनुमानित प्रतिक्रिया:

   - वस्तुओं की बिक्री करता है;
   - आपके समक्ष सेवाएं पेश करता है;
   - वस्तुओं का उत्पादन करता है;
   - वस्तुओं का विनिर्माण और बिक्री करता है;
   - खरीद और बिक्री करता है और;
   - ग्राहकों को अपनी ओर आकृष्ट करता है।
3. उद्यम, उद्यमी और उद्यमशीलता की संकल्पना की प्रस्तुति के लिए प्रतिक्रियाओं को समाकलित कीजिए। संकल्पनाओं का वर्णन करने के लिए चार्ट और पोस्टर का प्रयोग करें।

चरण-2

1. उद्यमी बनने के फायदों की चर्चा में सहभागियों को शामिल करें और उनसे कुछ इस तरह के प्रश्न पूछें, जैसे कि: ऐसी कौन-सी निश्चित बातें हैं जिन्हें आप एक उद्यमी में पाते हैं?
2. समूह चर्चा से प्राप्त परिणामों को प्रस्तुत करें।

शब्दावली

गतिविधियाँ	:	Activities
अनुकरण	:	Simulation
चूक	:	Default
विनिर्माण	:	Manufacture
हिदायतें	:	Instructions